खुद की तलाश

एक अरसे से तलाश थी, फुरसत की।
मिली तो युँ की जिंदगी से, मुलाकात हो गई।
बेचैन थी इस कदर, जिंदगी के भाग दौर मे।
कभी खुद को निहारने तक की,
फुरसत नहीं मिली।
जब फुरसत मिली तो इस कदर की,
बेचैनी की जरुरत समझ आ गई।।

हसरत थी सुरज को ढ़लते देखें।
और चाँद की चाँदनी मे खो जाऊँ।
जब दिखी तो युँ इस कदर की।
जिंदगी की मतलब समझ आ गई।।

नुमाईश थी अपने आप से, बात करने की।
कुछ पल खुद के साथ बात की।
जब बैठी खुद के साथ इस कदर की।
खुद की कमीयों से रुवरु हो गई।।

एक अरसे से तलाश थी फुरसत की।
मिली तो युँ की वक्त के बेवफाई,
समझ आ गई।
वक्त के वेबफाई समझ आ गई।।

लेखकः शालु प्रसाद

प्रकाशकः अमर नाथ साहू